

बाढ़ के बाद केरल की नदियों में पानी का स्तर गिरा

चर्चा में क्यों?

अगस्त माह के मध्य में आई वनाशकारी बाढ़ के लगभग तीन हफ्ते बाद केरल में अजीब घटना देखने को मिली। यहाँ बाढ़ के कारण नदियों के जल स्तर में जो वृद्धि हुई थी वह दूसरे दिने अचानक तेज़ी से कम हो गई।

प्रमुख बदि

- भरतपुझा नदी का तल जल स्तर कम हो जाने से कई जगहों पर दिखाई देने लगा है। कई अन्य नदियों का भी जल स्तर गिरना शुरू हो गया है, जसिने राज्य में संभावति सूखे की स्थति के बारे में अटकलों को मज़बूती प्रदान की है, वशिषकर पूरवोत्तर मानसून के वफिल रहने की दशा में यह स्थति उत्पनन हो सकती है।
- जबकि वशिषज्जों ने इस तरह के भय को दूर कयि जाने की मांग की है, इस घटना ने राज्य में जल की कमी की समस्या को उजागर कर दयिा है।

मुख्य कारण

- केंद्र सरकार के अंतरगत एक स्वायत्त अनुसंधान संस्थान, जल संसाधन विकास प्रबंधन केंद्र (CWRDM) के अनुसार, नदियों के गरिते हुए जल स्तर का मुख्य कारण उच्च भूमाक्षेत्रों में ऊपरी मटिटी का अत्यधिक कटाव और नदियों में गाद नक्षेपण है।
- पहाड़ियों और उच्च भूमाक्षेत्रों में शीर्ष मटिटी को कई जगहों पर दो मीटर तक की गहराई तक अचानक आई बाढ़ द्वारा हटा दयिा गया। जब बाढ़ के कारण ऊपरी मटिटी बह गई, तो इसके साथ ही वर्षा जल को सोखने की पहाड़ियों की क्षमता भी कम हो गई।
- वनों की कटाई के कारण पारस्थितिकीय वनाश, उच्च भूमाक्षेत्रों में हानिकारक भूमाउपयोग और धाराओं तथा नदियों में रेत खनन ने ऊपरी मटिटी के बह जाने और गाद नक्षेपण में योगदान दयिा। इन सभी कारणों के ऊपर सूक्ष्म रूप से जलवायु परिवर्तन का भी असर था।
- नदियों के सकिड़ने के सटीक कारणों को जानने के लयि एक "वसित्त, स्थान-वशिषिट भौगोलकि जाँच" आवश्यक है। सरकार ने पहले ही इसके कारणों को दूढ़ने का कार्य CWRDM को सौंपा है और उसने जाँच के लयि वैज्जानिकों का एक पैनल गठति कयिा है।
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कालीकट, (NIT-C) के वशिषज्जों ने कहा कि बाढ़ के बाद नदियों और कुओं में जल स्तर का नीचे आना सामान्य बात है।

भूजल स्तर में भी कमी

- सामान्यतः एक नदी मुहाने तक अपने द्वारा लाई गई रेत से होकर ही बहती है। हालाँकि, इस बार बाढ़ के साथ बहाकर लाई गई रेत और मुलायम चट्टानों से नदियों भर चुकी हैं अतः नदियों में जल का स्तर कम हो गया। जब नदी का जल स्तर घटता है तो भूजल स्तर का भी तब तक पुनः भरण नहीं हो पाता जब तक नदियाँ और भूजल की तालिका जुड़े हुए न हों।
- उम्मीद है कि भूगर्भीय घटना भवषिय में ठीक हो जाएगी। लेकनि संबंधति अधिकिरणों को भूखलन प्रवण क्षेत्रों में अवैज्जानकि नरिमाण और खनन कार्य को रोकना चाहयि क्योंकि ऐसी गतिविधियाँ नाजुक पश्चिमी घाट क्षेत्र में प्राकृतकि आपदाएँ पैदा कर रही हैं।